



CLASS 12 · CBSE HINDI CORE (302)

Hindi Core Solved Board Papers

हिंदी आधार (302) – अध्यायवार और प्रश्न-पत्रवार हल सहित बोर्ड प्रश्न

2025-2026

- ✓ भाग क : हर प्रश्न अध्याय और लेखन-रूप के अनुसार, अंकों के क्रम में, पूर्ण उत्तर सहित
- ✓ भाग ख : पूर्ण बोर्ड प्रश्न-पत्र, हर पत्र के बाद उसके हल
- ✓ हर अध्याय के लिए वर्षवार अंक-भार तालिका और सबसे अधिक पूछे गए विषय
- ✓ अपठित गद्यांश-काव्यांश, पठित अंश और रचनात्मक लेख के आदर्श उत्तर
- ✓ अंक-योजना के बिंदुओं पर आधारित पूर्ण उत्तर

WHAT YOU GET

CBSE हिंदी आधार प्रश्न-पत्र 2025-2026. हर प्रश्न का हल. अध्यायवार.

9

board papers

65

solved questions

2

years · 2025-26

26

chapters

0

MCQs solved

X प्रश्न अलग-अलग वर्षों में बिखरे



✓ सब एक जगह, अध्यायवार

X पता नहीं पहले क्या पढ़ें



✓ अंक-भार + सबसे अधिक पूछे गए विषय

X छोटे उत्तर, कम अंक



✓ अंक-योजना के अनुसार पूर्ण उत्तर

X लेखन के आदर्श उत्तर नहीं



✓ रचनात्मक लेख और पत्रकारिता के हल

PART A

Chapter-wise

A

- ✓ Weightage table
- ✓ Most-asked topics
- ✓ Every question + solution

PART B

Full papers

B

- ✓ Exactly as set by CBSE
- ✓ Solutions after each paper
- ✓ Timed 3-hour practice

2026 · 2/1/1

2025 · 2/1/1



Complete Notes · Solved PYQs

CLASS 6-12 · ALL SUBJECTS

100%
QUESTIONS
SOLVED

Made for board toppers



How to use this book

भाग क में किसी अध्याय या लेखन-रूप के सभी बोर्ड प्रश्न एक साथ हैं। अध्याय पढ़ने के बाद बिना उत्तर देखे प्रश्न हल करें, फिर मिलान करें और गलत प्रश्नों को एक सप्ताह बाद दोहराएँ।

हर प्रश्न के साथ लिखा है कि वह कहाँ पूछा गया, जैसे **CBSE 2026 · 2/1/1 · Q12**। अंक-भार तालिका देखकर तय करें कि पहले क्या दोहराना है।

भाग ख में पूरे प्रश्न-पत्र हैं। परीक्षा से पहले घड़ी लगाकर 3 घंटे में एक पत्र हल करें और फिर दिए गए हलों से जाँचें।

उत्तर बोर्ड की अंक-योजना के अनुसार लिखे गए हैं : हर अंक के लिए एक बिंदु, पाठ के उदाहरण या पंक्ति के साथ। शब्द-सीमा का ध्यान रखें।

Contents

Part A · Chapter-wise questions with solutions

- | | |
|---|---|
| 1. अपठित गद्यांश एवं काव्यांश 4 Qs | 14. बादल राग 2 Qs |
| 2. रचनात्मक लेख 2 Qs | 15. कवितावली, लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप 2 Qs |
| 3. अप्रत्याशित विषयों पर लेखन 2 Qs | 16. रुबाइयाँ, गज़ल 2 Qs |
| 4. कहानी का नाट्य रूपांतरण 2 Qs | 17. छोटा मेरा खेत, बगुलों के पंख 7 Qs |
| 5. रेडियो नाटक 2 Qs | 18. भक्तिन 2 Qs |
| 6. विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन 3 Qs | 19. बाज़ार दर्शन 3 Qs |
| 7. पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप 4 Qs | 20. काले मेघा पानी दे 2 Qs |
| 8. विशेष लेखन : स्वरूप और प्रकार 3 Qs | 21. पहलवान की ढोलक 1 Qs |
| 9. आत्म-परिचय, एक गीत 1 Qs | 22. शिरीष के फूल 3 Qs |
| 10. पतंग 2 Qs | 23. श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा, मेरी कल्पना का आदर्श समाज 3 Qs |
| 11. कविता के बहाने, बात सीधी थी पर 3 Qs | 24. सिल्वर वैडिंग 2 Qs |
| 12. कैमरे में बंद अपाहिज 2 Qs | 25. जूझ 2 Qs |
| 13. उषा 2 Qs | 26. अतीत में दबे पाँव 2 Qs |

Part B · Full board papers, each followed by its solutions

- | | |
|--------------------------------|--------------------------------|
| 1. CBSE 2026 · 2/1/1 solutions | 2. CBSE 2025 · 2/1/1 solutions |
|--------------------------------|--------------------------------|

65 questions in all. प्रश्न CBSE कक्षा 12 हिंदी आधार (302) के बोर्ड प्रश्न-पत्रों से लिए गए हैं और उत्तर बोर्ड की आधिकारिक अंक-योजना के बिंदुओं पर आधारित हैं।

CHAPTER 1

अपठित गद्यांश एवं काव्यांश

Board weightage 2025–2026

Year	2025	2026
Questions	2	2
Marks	18	18

Most asked topics

अपठित गद्यांश	2
अपठित काव्यांश	2

4 questions from 2 papers. Repeated questions are shown once with every year they were asked.

8 अंक : अपठित काव्यांश

CBSE 2026 · 2/1/1 · Q2

8 marks

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

धूप चमकती है चाँदी की साड़ी पहने
मैके में आई बेटी की तरह मगन है
फूली सरसों से आके लिपट गई है
जैसे दो हमजोली सखियाँ गले मिली हैं
सारंगी बजती है खेतों की गोदी में
दल-के-दल पक्षी उड़ते हैं मीठे स्वर के
अनावरण यह प्राकृत छवि की अमर भारती
रंग-बिरंगी पंखुरियों की खोल चेतना
सौरभ से मह-मह महकाता है दिगंत को
मानव-मन को भर देता है दिव्य दीप्ति से
शिव के नंदी-सा पानी पीता नदिका में
निर्मल नभ अवनी के ऊपर बिसुध खड़ा है
काल काग की तरह ठूँठ पर गुमसुम बैठा
सोई आँखों देख रहा है दिवावसान को ।

- (i) काव्यांश में धूप को किस रूप में चित्रित किया गया है ? (A) चाँदी की साड़ी के रूप में (B) फूली सरसों के रूप में (C) मैके में आई बेटी के रूप में (D) हमजोली सखी के रूप में (1)
- (ii) फूली हुई सरसों से आकर कौन लिपट गई ? (A) धूप (B) हवा (C) बेटी (D) चाँदनी (1)
- (iii) खेतों की गोदी में सारंगी बजती है – (A) खेतों के बीच से गुजरती हवा की ध्वनि की (B) खेतों के ऊपर उड़ते पक्षियों के मीठे स्वरों की (C) पक्षियों को उड़ाने के लिए किसान की बाँसुरी की (D) पक्षियों को बुलाने के लिए छोटे बच्चों की (1)
- (iv) ठूँठ पर बैठे काल की तुलना किससे और किस आधार पर की गई है ? (1)
- (v) नदी में पड़ते आकाश के प्रतिबिंब के बारे में कवि ने क्या कल्पना की है ? स्पष्ट कीजिए । (2)
- (vi) काव्यांश के आधार पर ग्रामीण प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन कीजिए । (2)

Solution

- (i) (C) मैके में आई बेटी के रूप में ।
- (ii) (A) धूप ।

(iii) (B) खेतों के ऊपर उड़ते पक्षियों के मीठे स्वरों की ।

(iv) काल (समय) की तुलना **कौए** से की गई है; आधार है **काला वर्ण** (रंग की समानता) – कौआ ठूँठ पर गुमसुम बैठा जैसे दिन ढलते देख रहा हो ।

(v) नदी में पड़ता निर्मल आकाश का प्रतिबिंब ऐसा लगता है मानो शिव का नंदी नदी में पानी पी रहा हो; और आकाश धरती के ऊपर सुध-बुध खोकर (बिसुध) खड़ा है ।

(vi) दूर तक खेतों में लहलहाती पीली सरसों और उस पर चाँदी-सी चमकती धूप; खेतों पर उड़ते पक्षियों के झुंड का मधुर कलरव; रंग-बिरंगे फूलों की सुगंध से महकती दिशाएँ; कल-कल बहती नदी और उसमें झाँकता निर्मल आकाश – यह सब ग्रामीण प्रकृति को अत्यंत मनोहर बना देता है ।

CBSE 2025 · 2/1/1 · Q2

8 marks

निम्नलिखित पद्यांश पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

है दीप एक पर मोल सूर्य से भी भारी
है व्यक्ति एक वर्तिका, दीप धरती सारी
देखो न दुखी हो व्यक्ति, उठे इंसानी लौ,
वनखंड जलाती सिर्फ एक ही चिनगारी ।
है झंझापथ, पद आहत, दीपक मद्धिम है
संघर्ष, रातकाली, मंजिल पर रिमझिम है
लेकिन पुकारता आ पहुँचा युग इंसानी
दो कदम रह गया स्वर्ग चढ़ाई अन्तिम है ।
दीपक, तेरे नीचे घिर रहा अँधेरा है
सोने की चमक तले अनीति का डेरा है
तू इंसानी जीवन की रात मिटा, वरना
इंसान स्वयं बनकर आ रहा सवेरा है ।

(i) 'है दीप एक सूर्य से भी भारी' – पंक्ति का आशय है – (A) एक अकेला शोषित व्यक्ति, संपूर्ण शोषक वर्ग से शक्तिशाली है । (B) अकेला दीपक सूर्य के प्रकाश से अधिक प्रकाश प्रदान करने में सक्षम है । (C) एक अकेला प्रकाश का स्रोत सूर्य से अधिक मूल्यवान है । (D) दीपक सूर्य की ऊर्जा से अधिक ऊर्जा अपने भीतर रखता है । (1)

(ii) 'इंसानी जीवन की रात मिटा' – से क्या अभिप्राय है ? (A) शोषित वर्ग के जीवन से रात्रि को दूर करना (B) शोषित वर्ग के घरों को प्रकाशित करना (C) इंसानों के जीवन से अंधकार को दूर करना (D) शोषित वर्ग के अभावों को दूर कर, उन्हें अधिकार देना (1)

(iii) कॉलम-1 को कॉलम-2 से सुमेलित कीजिए : (क) मद्धिम दीपक, (ख) झंझापथ, (ग) आहत पद — (1) लक्ष्य प्राप्ति के सीमित साधन (2) विपरीत परिस्थितियाँ (3) घायल अंग । विकल्प : (A) क-2, ख-3, ग-1 (B) क-1, ख-2, ग-3 (C) क-3, ख-1, ग-2 (D) क-1, ख-3, ग-2 (1)

(iv) 'इंसान स्वयं सवेरे का रूप धारण कर आ रहा है' – पंक्ति के माध्यम से किसे क्या चेतावनी दी गई है ? (1)

(v) 'वनखंड जलाती है एक चिनगारी' – पंक्ति से क्या अभिप्राय है ? (2)

(vi) 'इंसानी युग आने और स्वर्ग के दो कदम दूर रह जाने' – से क्या आशय है ? (2)

Solution

(i) (A) एक अकेला शोषित व्यक्ति, संपूर्ण शोषक वर्ग से शक्तिशाली है ।

(ii) (D) शोषित वर्ग के अभावों को दूर कर, उन्हें अधिकार देना ।

(iii) (B) क-1, ख-2, ग-3 ।

(iv) **शोषक वर्ग** को चेतावनी दी गई है कि यदि उसने अत्याचार रूपी अंधकार का अंत नहीं किया तो शोषित इंसान स्वयं शक्ति रूपी सवेरा बनकर आएगा और अन्याय को मिटा देगा ।

(v) शोषित व्यक्ति की शक्ति और सामर्थ्य को कम नहीं आँकना चाहिए । जिस प्रकार एक छोटी-सी चिनगारी पूरे वन-प्रदेश को जला देती है, उसी प्रकार विरोध का पहला स्वर शोषण के अंत की शुरुआत बन सकता है ।

(vi) मानव शोषण के अंत के बहुत निकट पहुँच चुका है । संघर्ष की अंतिम चढ़ाई बाकी है; जीवन की कठिनाइयों का अंत कर आदर्श, समतामूलक समाज (स्वर्ग) की स्थापना अब बहुत पास है ।

10 अंक : अपठित गद्यांश

CBSE 2026 · 2/1/1 · Q1

10 marks

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

संस्कृति और सभ्यता – ये दोनों दो शब्द हैं और उनके अर्थ भी अलग-अलग हैं। सभ्यता मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी बाहरी उन्नति करता है। संस्कृति मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी भीतरी उन्नति करता है, दया, ममता और परोपकार आदि सीखता है, गीत-नाद, कविता, चित्र और मूर्ति से आनन्द लेने की योग्यता हासिल करता है। एक वह भी समय था जब आदमी को घर बनाना नहीं आता था, जब वह पेड़ की छाया या पहाड़ की खोह में वास करता था; जब खेती करना भी नहीं आता था और वह कन्द-मूल खाकर गुजारा करता था; जब उसे कपड़ा बुनना भी नहीं आता था और वह या तो निर्वस्त्र रहता था या पेड़ों की छाल या जानवरों की खाल पहनकर रहता था। इस हालत को मनुष्य की असभ्यता की हालत कहते हैं। लेकिन, इस हालत से निकलकर आदमी ज्यों-ज्यों आगे बढ़ा, त्यों-त्यों वह सभ्य होता गया। यानी जब आदमी खेती करके अनाज उपजाने लगा, अनाज को आग से पकाकर खाने लगा, घर बनाकर रहने और कपड़े बुनकर उन्हें पहनने लगा, तब वह असभ्यता से निकलकर सभ्यता की ओर आने लगा। आज भी रेलगाड़ी, मोटर और हवाई जहाज, लंबी-चौड़ी सड़कें और बड़े-बड़े मकान, अच्छा भोजन और अच्छी पोशाक, ये सभ्यता की पहचान हैं और जिस देश में इनकी जितनी ही अधिकता है उस देश को हम उतना ही सभ्य मानते हैं। मगर, संस्कृति इन सबसे भिन्न है। वह मोटर नहीं, मोटर बनाने की कला है; मकान नहीं, मकान बनाने की रुचि है। भोजन की सामग्री हम सभ्यता के जरिये पैदा करते हैं, लेकिन जिस ढंग से हम भोजन तैयार करते हैं और जिस कला से हम उसे खाते हैं वह हमारी संस्कृति कहलाती है।

(i) संस्कृति सभ्यता से भिन्न है क्योंकि संस्कृति – (A) सभ्यता की अपेक्षा स्थूल और विशद होती है (B) सभ्यता की अपेक्षा अत्यंत सूक्ष्म होती है (C) समन्वयमूलक है और सभ्यता सूक्ष्म होती है (D) आदर्शमूलक है और सभ्यता यथार्थ होती है (1)

(ii) गद्यांश के अनुसार 'सभ्यता' का अभिप्राय क्या है? (A) मानव को कलाकार बना देने की विशेषता (B) मानव के स्वाधीन चिंतन की गाथा (C) मनुष्य की ऐश्वर्यपूर्ण कहानी (D) मनुष्य के भौतिक विकास का क्रम (1)

(iii) कथन : संस्कृति से मनुष्य दया, ममता, परोपकार आदि गुण और कला का रसास्वादन करना सीखता है। कारण : संस्कृति मनुष्य के मानवीय मूल्यों और कौशल का विकास करती है। (A) कथन सही है, कारण गलत है। (B) कथन गलत है, कारण सही है। (C) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है। (D) कथन और कारण दोनों गलत हैं। (1)

(iv) 'सभ्यता' और 'संस्कृति' के अंतर को उचित उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए। (1)

(v) 'सभ्यता और संस्कृति दोनों साथ-साथ चलते हैं' – कैसे? उदाहरण देकर इस कथन की पुष्टि कीजिए। (2)

(vi) "संस्कृति असल में शरीर का नहीं आत्मा का गुण है।" इस कथन को गद्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए। (2)

(vii) सभ्यता के विकास से पूर्व मनुष्य की क्या स्थिति थी? सभ्यता के विकास के क्या परिणाम हुए? (2)

Solution

(i) (B) सभ्यता की अपेक्षा अत्यंत सूक्ष्म होती है।

(ii) (D) मनुष्य के भौतिक विकास का क्रम।

(iii) (C) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(iv) सभ्यता मनुष्य की **बाहरी उन्नति** है और संस्कृति **भीतरी उन्नति**। जैसे – मोटर और मकान सभ्यता हैं, जबकि मोटर बनाने की कला और मकान बनाने की रुचि संस्कृति है।

(v) सभ्यता और संस्कृति एक-दूसरे के पूरक हैं। आवश्यक वस्तुओं और सुविधाओं का निर्माण सभ्यता है और उनके उपयोग का ढंग संस्कृति। उदाहरण – भोजन की सामग्री पैदा करना सभ्यता है, किंतु भोजन तैयार करने और खाने की कला संस्कृति है।

(vi) संस्कृति मनुष्य की भीतरी उन्नति का गुण है। इसी से मनुष्य दया, ममता और परोपकार सीखता है तथा गीत-नाद, कविता, चित्र और मूर्ति से आनंद लेने की योग्यता प्राप्त करता है। ये गुण शरीर के नहीं, मन और आत्मा के हैं; इसलिए संस्कृति आत्मा का गुण है।

(vii) **पूर्व की स्थिति** – मनुष्य असभ्य अवस्था में था; वह पेड़ की छाया या पहाड़ की खोह में रहता था, कंद-मूल खाकर गुजारा करता था और निर्वस्त्र रहता था या पेड़ों की छाल, जानवरों की खाल पहनता था।

परिणाम – वह खेती करके अनाज उपजाने लगा, अनाज पकाकर खाने लगा, घर बनाकर रहने और कपड़े बुनकर पहनने लगा; आगे चलकर रेल, मोटर, हवाई जहाज जैसे साधन बने।

निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

प्रकृति के कई रंग हैं और उन रंगों में कोई होड़ नहीं है। रंगों की इस विशाल दुनिया में हम भी तो एक रंग ही हैं। पर हमारे साथ दिक्कत है। एक तो हमें अपने रंगों का पता नहीं है। दूसरा, हम दूसरों के रंगों से डरते हैं। हम भूल जाते हैं कि जीवन बहुरंगी है। दूसरे के जैसा होने की या उन्हें अपने जैसा करने की हमारी कोशिशों का कोई बहुत अर्थ भी नहीं है। कारण जबर्दस्ती चढ़ाए गए रंग देर तक टिकते ही नहीं हैं। सबको एक ही रंग में रंगने की कोशिश से बेहतर है कि हम एक-दूसरे को अपना सहयोग दें। दो रंग जुड़ते हैं तो एक नया ही रंग बन जाता है। इसी तरह आपस के साथ से हम भी कुछ नए रंग ज़िंदगी में जोड़ सकते हैं।

सुख सतरंगी है तो दुख के भी कई रंग हैं। फिर, सफेद और काले रंग के भी कई प्रतिरूप होते हैं। गायिका एमी ग्रांट कहती हैं, 'काले रंग के बिना किसी भी रंग को गहराई नहीं मिलती।' बात केवल परछाई की नहीं है, पूर्णता की है। ज़्यादातर लोग निराशा, अकेलापन, चुनौती, डर और उदासी के रंगों से दूर भागते हैं। वे जीवन में मुश्किल समय आते ही बेचैन हो उठते हैं जबकि मनुष्य की विकास यात्रा यही कहती है कि दुख, दर्द, कड़ी मेहनत, धैर्य और चुनौतियों के रंगों से मिलकर ही हमें जीत की चमक मिलती है। लेखक रे विलियम्स का मानना है कि बड़ी बारीकी से हम अपने दिमाग की नकारात्मक घेराबंदी करते चले जाते हैं, जो है उसके बारे में ध्यान नहीं देते, अभावों के विषय में सोचते चले जाते हैं और जीवन को जटिल बना लेते हैं।

प्रकृति हर दिन होली खेलती है, एक ही दिन में कई रंग बदलती है। दुख-दर्द का कोई रंग स्थायी नहीं होता। हमारी दुनिया रंगीन हो जाती है जब हम अपने रंगों से संतुष्ट हो जाते हैं और दूसरों का देखकर खुश होते हैं।

(i) 'हमें अपने रंगों का पता नहीं है' - से अभिप्राय है - (A) अपने स्वभाव का ज्ञान नहीं है। (B) जीवन की विविधता का ज्ञान नहीं है।

(C) अपनी विशेषताओं का ज्ञान नहीं है। (D) अपनी परंपराओं का ज्ञान नहीं है। (1)

(ii) 'हम भूल जाते हैं कि जीवन बहुरंगी है' - पंक्ति में जीवन के बहुरंगी होने का अर्थ है - (A) जीवन का रंग-बिरंगा होना (B) जीवन में दुख-तकलीफ़ का होना (C) जीवन में सुख-दुख का होना (D) जीवन का बहुत विशाल होना (1)

(iii) कथन : प्रकृति के कई रंग हैं और रंगों में कोई होड़ नहीं है। कारण : प्रकृति सहज ही एक दिन में कई रंग बदलती है। (A) कारण सही है किंतु कथन गलत है। (B) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं। (C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं किंतु कारण कथन की गलत व्याख्या करता है। (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। (1)

(iv) प्रकृति के माध्यम से लेखक हमें क्या संदेश देना चाहता है ? (1)

(v) रे विलियम्स के अनुसार जीवन की जटिलता का क्या कारण है ? (2)

(vi) 'दो रंग जुड़ते हैं तो एक नया ही रंग बन जाता है' - पंक्ति का क्या आशय है ? (2)

(vii) 'प्रकृति हर दिन होली खेलती है' - से क्या अभिप्राय है ? इसके माध्यम से क्या संदेश दिया गया है ? (2)

Solution

(i) (C) अपनी विशेषताओं का ज्ञान नहीं है।

(ii) (C) जीवन में सुख-दुख का होना।

(iii) (C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं किंतु कारण कथन की गलत व्याख्या करता है।

(iv) सुख-दुख से भरे जीवन से संतुष्ट रहना और दूसरों को देखकर खुश होना।

(v) रे विलियम्स के अनुसार हम अपने दिमाग की नकारात्मक घेराबंदी करते हैं, यानी जीवन में नकारात्मक भावों को स्थान देते हैं; जो हमारे पास उपलब्ध है उस पर ध्यान न देकर अभावों के विषय में सोचते रहते हैं - इसी से जीवन जटिल बन जाता है।

(vi) जब दो भिन्न स्वभाव और प्रकृति वाले व्यक्ति परस्पर मिलकर काम करते हैं तो उनकी रचनात्मक ऊर्जा जीवन को नया आयाम देती है। अतः दूसरों पर अपने विचार थोपने के बजाय परस्पर सहयोग की भावना रखनी चाहिए।

(vii) **अभिप्राय** - प्रकृति पल-पल बदलती रहती है; एक ही दिन में सुबह, दोपहर, शाम और रात के अनेक रंग दिखाती है। **संदेश** - गतिशील जीवन में दुख-दर्द स्थायी नहीं होता; अच्छे-बुरे समय बदलते रहते हैं, इसलिए हमें धैर्य रखना चाहिए।

CBSE BOARD PAPER

2026 · Q.P. Code 2/1/1

Time: 3 hours

Maximum marks: 80

खंड - क : अपठित बोध

10

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

संस्कृति और सभ्यता – ये दोनों दो शब्द हैं और उनके अर्थ भी अलग-अलग हैं। सभ्यता मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी बाहरी उन्नति करता है। संस्कृति मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी भीतरी उन्नति करता है, दया, ममता और परोपकार आदि सीखता है, गीत-नाद, कविता, चित्र और मूर्ति से आनन्द लेने की योग्यता हासिल करता है। एक वह भी समय था जब आदमी को घर बनाना नहीं आता था, जब वह पेड़ की छाया या पहाड़ की खोह में वास करता था; जब खेती करना भी नहीं आता था और वह कन्द-मूल खाकर गुजारा करता था; जब उसे कपड़ा बुनना भी नहीं आता था और वह या तो निर्वस्त्र रहता था या पेड़ों की छाल या जानवरों की खाल पहनकर रहता था। इस हालत को मनुष्य की असभ्यता की हालत कहते हैं। लेकिन, इस हालत से निकलकर आदमी ज्यों-ज्यों आगे बढ़ा, त्यों-त्यों वह सभ्य होता गया। यानी जब आदमी खेती करके अनाज उपजाने लगा, अनाज को आग से पकाकर खाने लगा, घर बनाकर रहने और कपड़े बुनकर उन्हें पहनने लगा, तब वह असभ्यता से निकलकर सभ्यता की ओर आने लगा। आज भी रेलगाड़ी, मोटर और हवाई जहाज, लंबी-चौड़ी सड़कें और बड़े-बड़े मकान, अच्छा भोजन और अच्छी पोशाक, ये सभ्यता की पहचान हैं और जिस देश में इनकी जितनी ही अधिकता है उस देश को हम उतना ही सभ्य मानते हैं। मगर, संस्कृति इन सबसे भिन्न है। वह मोटर नहीं, मोटर बनाने की कला है; मकान नहीं, मकान बनाने की रुचि है। भोजन की सामग्री हम सभ्यता के जरिये पैदा करते हैं, लेकिन जिस ढंग से हम भोजन तैयार करते हैं और जिस कला से हम उसे खाते हैं वह हमारी संस्कृति कहलाती है।

(i) संस्कृति सभ्यता से भिन्न है क्योंकि संस्कृति – (A) सभ्यता की अपेक्षा स्थूल और विशद होती है (B) सभ्यता की अपेक्षा अत्यंत सूक्ष्म होती है (C) समन्वयमूलक है और सभ्यता सूक्ष्म होती है (D) आदर्शमूलक है और सभ्यता यथार्थ होती है (1)

(ii) गद्यांश के अनुसार 'सभ्यता' का अभिप्राय क्या है ? (A) मानव को कलाकार बना देने की विशेषता (B) मानव के स्वाधीन चिंतन की गाथा (C) मनुष्य की ऐश्वर्यपूर्ण कहानी (D) मनुष्य के भौतिक विकास का क्रम (1)

(iii) कथन : संस्कृति से मनुष्य दया, ममता, परोपकार आदि गुण और कला का रसास्वादन करना सीखता है। कारण : संस्कृति मनुष्य के मानवीय मूल्यों और कौशल का विकास करती है। (A) कथन सही है, कारण गलत है। (B) कथन गलत है, कारण सही है। (C) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है। (D) कथन और कारण दोनों गलत हैं। (1)

(iv) 'सभ्यता' और 'संस्कृति' के अंतर को उचित उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए। (1)

(v) 'सभ्यता और संस्कृति दोनों साथ-साथ चलते हैं' – कैसे ? उदाहरण देकर इस कथन की पुष्टि कीजिए। (2)

(vi) "संस्कृति असल में शरीर का नहीं आत्मा का गुण है।" इस कथन को गद्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए। (2)

(vii) सभ्यता के विकास से पूर्व मनुष्य की क्या स्थिति थी ? सभ्यता के विकास के क्या परिणाम हुए ? (2)

2. निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

धूप चमकती है चाँदी की साड़ी पहने
मैके में आई बेटी की तरह मगन है
फूली सरसों से आके लिपट गई है
जैसे दो हमजोली सखियाँ गले मिली हैं
सारंगी बजती है खेतों की गोदी में
दल-के-दल पक्षी उड़ते हैं मीठे स्वर के
अनावरण यह प्राकृत छवि की अमर भारती
रंग-बिरंगी पंखुरियों की खोल चेतना
सौरभ से मह-मह महकाता है दिगंत को
मानव-मन को भर देता है दिव्य दीप्ति से
शिव के नंदी-सा पानी पीता नदिका में
निर्मल नभ अवनी के ऊपर बिसुध खड़ा है
काल काग की तरह ठूँठ पर गुमसुम बैठा
सोई आँखों देख रहा है दिवावसान को ।

- (i) काव्यांश में धूप को किस रूप में चित्रित किया गया है ? (A) चाँदी की साड़ी के रूप में (B) फूली सरसों के रूप में (C) मैके में आई बेटी के रूप में (D) हमजोली सखी के रूप में (1)
- (ii) फूली हुई सरसों से आकर कौन लिपट गई ? (A) धूप (B) हवा (C) बेटी (D) चाँदनी (1)
- (iii) खेतों की गोदी में सारंगी बजती है – (A) खेतों के बीच से गुजरती हवा की ध्वनि की (B) खेतों के ऊपर उड़ते पक्षियों के मीठे स्वरों की (C) पक्षियों को उड़ाने के लिए किसान की बाँसुरी की (D) पक्षियों को बुलाने के लिए छोटे बच्चों की (1)
- (iv) ठूँठ पर बैठे काल की तुलना किससे और किस आधार पर की गई है ? (1)
- (v) नदी में पड़ते आकाश के प्रतिबिंब के बारे में कवि ने क्या कल्पना की है ? स्पष्ट कीजिए । (2)
- (vi) काव्यांश के आधार पर ग्रामीण प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन कीजिए । (2)

खंड – ख : अभिव्यक्ति और माध्यम

3. निम्नलिखित दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए : (i) जंक फूड का बढ़ता चलन (ii) महानगरों का बढ़ता आकर्षण (iii) बाज़ारों का बदलता स्वरूप

6

4. (i) 'रेडियो मूलतः एकरेखीय (लीनियर) माध्यम है।' – कैसे ? (लगभग 40 शब्द)

2

OR

(ii) एंकर-बाइट से क्या तात्पर्य है ? (लगभग 40 शब्द)

2

OR

(iii) विशेष लेखन की भाषा-शैली सामान्य लेखन से किस प्रकार भिन्न है ? स्पष्ट कीजिए । (लगभग 40 शब्द)

2

OR

(iv) समाचार और फ़ीचर में क्या अंतर है ? उल्लेख कीजिए । (लगभग 40 शब्द)

2

OR

(v) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट किसे कहते हैं ? (लगभग 40 शब्द)

2

5. (i) 'अप्रत्याशित विषयों पर लिखने से लेखन पर पकड़ मज़बूत होती है।' – कैसे ? स्पष्ट कीजिए । (लगभग 80 शब्द)

4

OR

(ii) कहानी के पात्रों के नाट्य रूपांतरण में किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ? स्पष्ट कीजिए । (लगभग 80 शब्द)

4

OR

(iii) रेडियो नाटक के लिए कहानी का चयन करते समय किन महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना आवश्यक है और क्यों ? (लगभग 80 शब्द)

4

खंड – ग : आरोह तथा वितान

6. पठित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए :

5

भोर का नभ

राख से लीपा हुआ चौका

(अभी गीला पड़ा है)

बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर से

कि जैसे धुल गई हो

स्लेट पर या लाल खड़िया चाक

मल दी हो किसी ने

नील जल में या किसी की

गौर झिलमिल देह

जैसे हिल रही हो ।

(i) काव्यांश में 'काली सिल' उपमान किसके लिए प्रयुक्त किया गया है ? (A) अंधकार से युक्त प्रकृति (B) अँधेरे से युक्त आसमान (C) अंधकार से युक्त पृथ्वी (D) रात्रि का अंधकार

(ii) 'बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर से' – पंक्ति का सही अर्थ है : (A) भोर का आकाश लालिमा से युक्त है । (B) भोर का आकाश काला है । (C) भोर में केसर को धोया गया है । (D) भोर में काली सिल को धोया गया है ।

(iii) इस काव्यांश में कवि ने उषा का कौन-सा चित्र प्रस्तुत किया है ? (A) छायाचित्र (B) रेखाचित्र (C) शब्दचित्र (D) भित्तिचित्र

(iv) कवि द्वारा भोर को 'राख से लीपा हुआ चौका' कहना प्रतिपादित करता है कि भोर का नभ : (A) अपनी आभा से चमत्कृत कर रहा है । (B) प्राकृतिक सुंदरता को बढ़ा रहा है । (C) सफ़ेद व नीले वर्णों का अद्भुत मिश्रण है । (D) नए परिवर्तनों व आयामों का प्रतीक है ।

(v) 'नील जल में या किसी की गौर झिलमिल देह' – का वर्णन किस अनुभूति से संबंधित है ? (A) निर्मलता और उज्ज्वलता (B) कृत्रिमता और पवित्रता (C) कोमलता और सुंदरता (D) विस्मय और रहस्य

7. (i) "सब घर एक कर देना" – पंक्ति का बच्चों और कविता के संदर्भ में क्या औचित्य है ? 'कविता के बहाने' कविता के आधार पर लिखिए । (लगभग 60 शब्द)

3

OR

(ii) 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता को आप करुणा की कविता मानते हैं या क्रूरता की ? तर्क सहित उत्तर लिखिए । (लगभग 60 शब्द)

3

OR

(iii) 'तुलसीदास का युग बेरोज़गारी से त्रस्त था' – 'कवितावली' के संदर्भ में इस कथन को सिद्ध कीजिए । (लगभग 60 शब्द)

3

8. (i) 'पतंग' कविता में कवि ने भादों के समाप्त होने के बाद प्रकृति में आए परिवर्तनों को कैसे अभिव्यक्त किया है ? स्पष्ट कीजिए । (लगभग 40 शब्द)

2

OR

(ii) 'बादल राग' कविता में 'जीवन का पारावार' किसे कहा गया है और क्यों ? (लगभग 40 शब्द)

2

OR

(iii) 'बात सीधी थी पर' कविता के संदर्भ में 'भाषा में पेंच कसना' के आशय को स्पष्ट कीजिए । (लगभग 40 शब्द)

2

9. पठित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए :
- अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। निस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं। आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।
- सियारों का क्रंदन और पेचक की डरावनी आवाज़ कभी-कभी निस्तब्धता को अवश्य भंग कर देती थी। गाँव की झोंपड़ियों से कराहने और कै करने की आवाज़, 'हरे राम ! हे भगवान !' की टेर अवश्य सुनाई पड़ती थी। बच्चे भी कभी-कभी निर्बल कंठों से 'माँ-माँ' पुकारकर रो पड़ते थे। पर इससे रात्रि की निस्तब्धता में विशेष बाधा नहीं पड़ती थी।
- कुत्तों में परिस्थिति को ताड़ने की एक विशेष बुद्धि होती है। वे दिन-भर राख के घूरों पर गठरी की तरह सिकुड़कर, मन मारकर पड़े रहते थे। संध्या या गंभीर रात्रि को सब मिलकर रोते थे।
- (i) अँधेरी रात चुपचाप आँसू क्यों बहा रही थी ? (A) जंगली पशुओं की डरावनी आवाज़ के कारण (B) प्रकृति की असमर्थता व विवशता के कारण (C) महामारी के कारण गाँव वालों की असहाय स्थिति से दुखी होने के कारण (D) रात में व्याप्त अंधकार और सन्नाटे के डर के कारण
- (ii) स्तंभ मिलान : क. प्रकाश का नाम नहीं, ख. तारे की ज्योति और शक्ति का शेष होना, ग. चित न होना — (i) हार न मानना (ii) आशा और जिजीविषा का अभाव (iii) पीड़ित गाँव वालों की मदद न कर पाना। (A) क-(iii), ख-(i), ग-(ii) (B) क-(ii), ख-(iii), ग-(i) (C) क-(i), ख-(ii), ग-(iii) (D) क-(i), ख-(iii), ग-(ii)
- (iii) रात्रि के भयावहपन का उल्लेख किस प्रभाव को दर्शाने के लिए किया गया है ? (A) महामारी की भयानकता और दुष्प्रभाव का उल्लेख करने हेतु (B) निस्तब्धता में मानवीय पीड़ा की झलक दिखाने हेतु (C) रात्रि में भी गाँव में हलकी चहल-पहल बताने हेतु (D) रात में बच्चों के उत्साह व निडरता का प्रदर्शन करने हेतु
- (iv) गद्यांश में इनमें से किसका उल्लेख नहीं मिलता है ? (A) रात्रि की निस्तब्धता (B) तारों की भावुकता (C) उत्तेजना युक्त उत्साह (D) आहों का हृदय में दबना
- (v) 'पेचक की डरावनी आवाज़' का प्रतीकार्थ है : (A) जीव-जंतुओं की सक्रियता (B) मृत्यु या अनिष्ट की आहट (C) पक्षियों की स्वाभाविक ध्वनि (D) ग्रामीण परिवेश की सजीवता
10. (i) महादेवी वर्मा ने भक्तिन के साथ अपने संबंध को किस रूप में महसूस किया ? 'भक्तिन' पाठ के आधार पर लिखिए। (लगभग 60 शब्द) 3
- OR**
- (ii) 'काले मेघा पानी दे' पाठ में लोक-प्रचलित विश्वास और विज्ञान के द्वंद्व का चित्रण किस प्रकार किया गया है ? (लगभग 60 शब्द) 3
- OR**
- (iii) श्रम विभाजन किसे कहते हैं ? सभ्य समाज के लिए इसकी क्या आवश्यकता है ? (लगभग 60 शब्द) 3
11. (i) 'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर भगत जी के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (लगभग 40 शब्द) 2
- OR**
- (ii) 'शिरीष के फूल' निबंध के आधार पर लिखिए कि पाठ में शिरीष के फूल की तुलना किससे और क्यों की गई है ? (लगभग 40 शब्द) 2
- OR**
- (iii) "'दासता' केवल कानूनी पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता।" इस कथन के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि डॉ. भीमराव आंबेडकर ने 'मेरी कल्पना का आदर्श समाज' में 'दासता' को किन व्यापक अर्थों में परिभाषित किया है ? (लगभग 40 शब्द) 2
12. (i) "'सिल्वर वैडिंग' कहानी वर्तमान युग में बदलते हुए जीवन मूल्यों की कहानी है।" स्पष्ट कीजिए कि ये जीवन मूल्य कौन-से हैं और क्यों बदल रहे हैं। (लगभग 100 शब्द) 5
- OR**
- (ii) "यह खेती हमें गह्वे में धकेल रही है। पढ़ जाऊँगा तो नौकरी लग जाएगी, चार पैसे हाथ में रहेंगे।" – 'जूझ' पाठ से उद्धृत इस कथन के संदर्भ में ग्रामीण युवाओं की मानसिक स्थिति का वर्णन कीजिए। (लगभग 100 शब्द) 5

OR

(iii) लेखक ने सिंधु घाटी सभ्यता के सबसे बड़े नगर मुअनजो-दड़ो की नगर-योजना की तुलना आज के नगरों से किस प्रकार की है ? 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर विवेचना कीजिए। (लगभग 100 शब्द)

5

Solutions · CBSE 2026 · 2/1/1

Q1

(i) (B) सभ्यता की अपेक्षा अत्यंत सूक्ष्म होती है।

(ii) (D) मनुष्य के भौतिक विकास का क्रम।

(iii) (C) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(iv) सभ्यता मनुष्य की **बाहरी उन्नति** है और संस्कृति **भीतरी उन्नति**। जैसे – मोटर और मकान सभ्यता हैं, जबकि मोटर बनाने की कला और मकान बनाने की रुचि संस्कृति है।

(v) सभ्यता और संस्कृति एक-दूसरे के पूरक हैं। आवश्यक वस्तुओं और सुविधाओं का निर्माण सभ्यता है और उनके उपयोग का ढंग संस्कृति। उदाहरण – भोजन की सामग्री पैदा करना सभ्यता है, किंतु भोजन तैयार करने और खाने की कला संस्कृति है।

(vi) संस्कृति मनुष्य की भीतरी उन्नति का गुण है। इसी से मनुष्य दया, ममता और परोपकार सीखता है तथा गीत-नाद, कविता, चित्र और मूर्ति से आनंद लेने की योग्यता प्राप्त करता है। ये गुण शरीर के नहीं, मन और आत्मा के हैं; इसलिए संस्कृति आत्मा का गुण है।

(vii) **पूर्व की स्थिति** – मनुष्य असभ्य अवस्था में था; वह पेड़ की छाया या पहाड़ की खोह में रहता था, कंद-मूल खाकर गुज़ारा करता था और निर्वस्त्र रहता था या पेड़ों की छाल, जानवरों की खाल पहनता था।

परिणाम – वह खेती करके अनाज उपजाने लगा, अनाज पकाकर खाने लगा, घर बनाकर रहने और कपड़े बुनकर पहनने लगा; आगे चलकर रेल, मोटर, हवाई जहाज़ जैसे साधन बने।

Q2

(i) (C) मैके में आई बेटी के रूप में।

(ii) (A) धूप।

(iii) (B) खेतों के ऊपर उड़ते पक्षियों के मीठे स्वरों की।

(iv) काल (समय) की तुलना **कौए** से की गई है; आधार है **काला वर्ण** (रंग की समानता) – कौआ ठूँठ पर गुमसुम बैठा जैसे दिन ढलते देख रहा हो।

(v) नदी में पड़ता निर्मल आकाश का प्रतिबिंब ऐसा लगता है मानो शिव का नंदी नदी में पानी पी रहा हो; और आकाश धरती के ऊपर सुध-बुध खोकर (बिसुध) खड़ा है।

(vi) दूर तक खेतों में लहलहाती पीली सरसों और उस पर चाँदी-सी चमकती धूप; खेतों पर उड़ते पक्षियों के झुंड का मधुर कलरव; रंग-बिरंगे फूलों की सुगंध से महकती दिशाएँ; कल-कल बहती नदी और उसमें झाँकता निर्मल आकाश – यह सब ग्रामीण प्रकृति को अत्यंत मनोहर बना देता है।

Q3

जंक फूड का बढ़ता चलन

आज बच्चे हों या युवा, सबकी पसंद पिज़्ज़ा, बर्गर, चाउमीन और कोल्ड ड्रिंक बन गई है। व्यस्त जीवन-शैली, दोनों माता-पिता का कामकाजी होना, आकर्षक विज्ञापन और ऑनलाइन डिलीवरी ने जंक फूड को घर-घर पहुँचा दिया है। यह झटपट तैयार होता है और स्वाद में चटपटा लगता है, इसलिए इसका चलन तेज़ी से बढ़ रहा है।

परंतु इसका दुष्प्रभाव गंभीर है। अधिक नमक, चीनी और वसा वाला यह भोजन मोटापा, मधुमेह, उच्च रक्तचाप और पेट के रोगों को जन्म देता है। इसमें पोषक तत्व नहीं होते, इसलिए बच्चे कमज़ोर और आलसी हो जाते हैं।

आवश्यक है कि हम घर के ताज़े, संतुलित भोजन, फल और मोटे अनाज को अपनाएँ। विद्यालयों में जंक फूड पर रोक लगे और माता-पिता स्वयं उदाहरण बनें। स्वाद से अधिक स्वास्थ्य को महत्व देना ही समझदारी है।

(विषय-वस्तु 4 · भाषा 1 · प्रस्तुति 1)

अन्य विषयों के बिंदु – (ii) महानगरों का आकर्षण: रोज़गार, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएँ, आधुनिक जीवन; दुष्परिणाम: भीड़, प्रदूषण, झुगियाँ, गाँवों का खाली होना; उपाय: गाँवों-कस्बों का विकास। (iii) बाज़ारों का बदलता स्वरूप: हाट और दुकानों से मॉल और ऑनलाइन बाज़ार तक; सुविधा और विविधता, परंतु उपभोक्तावाद, दिखावा और छोटे दुकानदारों पर संकट।

Q4(i)

रेडियो पर समाचार और कार्यक्रम एक निश्चित क्रम में, एक के बाद एक प्रसारित होते हैं; श्रोता अखबार की तरह आगे-पीछे जाकर अपनी पसंद का अंश नहीं सुन सकता। कार्यक्रम का समय और अवधि निश्चित होती है, श्रोता के अनुसार परिवर्तन संभव

नहीं और तत्काल प्रतिक्रिया या संवाद की गुंजाइश नहीं होती।

- Q4(ii)** एंकर-बाइट टी.वी. पर खबर प्रसारित करने का एक चरण है। इसमें एंकर खबर पढ़ता है और साथ में घटना के प्रत्यक्षदर्शियों या संबंधित व्यक्तियों के कथन (बाइट) दिखाए जाते हैं। इससे खबर की पुष्टि होती है और उसे प्रामाणिकता मिलती है।
- Q4(iii)** सामान्य लेखन की भाषा-शैली बोधगम्य, सरस और भावात्मक होती है तथा उसमें बोलचाल के शब्दों का प्रयोग होता है। विशेष लेखन की भाषा-शैली औपचारिक, सुस्पष्ट और विषय-केंद्रित होती है; उसमें उस क्षेत्र (खेल, व्यापार, विज्ञान आदि) की विशिष्ट तकनीकी शब्दावली का प्रयोग होता है।
- Q4(iv)** (1) समाचार तात्कालिक घटनाओं से संबंधित तथ्यात्मक लेखन है, फ़ीचर सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है। (2) समाचार का उद्देश्य सूचना देना है, फ़ीचर सूचना के साथ शिक्षित और मनोरंजन भी करता है। (3) समाचार उलटा पिरामिड शैली में लिखा जाता है और उसमें पत्रकार की राय नहीं होती; फ़ीचर की शैली निश्चित नहीं होती और उसमें लेखक की राय हो सकती है; समाचार की शब्द-सीमा निश्चित होती है, फ़ीचर की नहीं।
- Q4(v)** विश्लेषणात्मक रिपोर्ट विशेष रिपोर्ट का एक प्रकार है। इसमें किसी घटना, समस्या या मुद्दे से जुड़े तथ्यों, सूचनाओं और आँकड़ों की गहन छानबीन और विश्लेषण करके उसके अहम पहलुओं को सामने रखा जाता है और पाठक को उसकी विस्तृत तथा व्यापक जानकारी दी जाती है।
- Q5(i)** अप्रत्याशित (नए) विषयों पर लिखने से – (1) हमारी **सृजनात्मक शक्ति** विकसित होती है, क्योंकि रटी-रटाई सामग्री काम नहीं आती। (2) **मौलिक अभिव्यक्ति** का अवसर मिलता है; हम अपने विचार अपने ढंग से रखना सीखते हैं। (3) तर्क, विचार और उदाहरणों से अपनी बात को पुष्ट करने की क्षमता बढ़ती है। (4) कम समय में विचारों को संकलित कर सुसंगत ढंग से प्रस्तुत करने का अभ्यास होता है, जिससे भाषा पर अच्छी पकड़ बनती है और लिखित अभिव्यक्ति की क्षमता बढ़ती है।
- Q5(ii)** (1) कहानी के पात्रों की क्रियात्मकता (उनके कार्य और स्वभाव) नाटक के पात्रों से मेल खाए; पात्रों का चरित्र स्पष्ट रूप से उभरे। (2) पात्रों की भाव-भंगिमाओं, वेशभूषा और उनके तौर-तरीकों का उचित ध्यान रखा जाए। (3) पात्रों का अभिनय और संवाद रंगमंच के अनुरूप हों, संवाद छोटे, सरल और पात्रानुकूल हों। (4) पात्रों के मानसिक द्वंद्व को ध्वनि, प्रकाश, स्वगत कथन और वॉयस ओवर द्वारा अभिव्यक्त किया जाए।
- Q5(iii)** **ध्यान रखने योग्य बातें** – (1) कहानी केवल घटना-प्रधान न हो, उसमें संवाद और ध्वनि के लिए अवसर हों; (2) उसकी अवधि बहुत लंबी न हो (प्रायः 15-30 मिनट); (3) पात्रों की संख्या सीमित हो (5-6 से अधिक नहीं)।
क्यों – रेडियो में दृश्य नहीं होते, केवल ध्वनि होती है; इसलिए श्रोताओं की रुचि बनाए रखना ज़रूरी है। लंबी अवधि तक श्रोता जुड़े नहीं रह पाते और अधिक पात्र होने पर केवल आवाज़ से उन्हें पहचानना कठिन हो जाता है।
- Q6** (i) (B) अँधेरे से युक्त आसमान।
(ii) (A) भोर का आकाश लालिमा से युक्त है।
(iii) (C) शब्दचित्र।
(iv) (C) सफ़ेद व नीले वर्णों का अद्भुत मिश्रण है।
(v) (A) निर्मलता और उज्ज्वलता।
(कविता : 'उषा', शमशेर बहादुर सिंह)
- Q7(i)** बच्चे खेलते समय अपने-पराए, घर-बाहर का भेद भूलकर सब घरों को एक कर देते हैं; कविता भी शब्दों का ऐसा खेल है जो सबको एकता के सूत्र में बाँध देती है। (1) बच्चे भेदभाव नहीं समझते, कविता भी समाज को जोड़ती है। (2) बच्चे सरल हृदय होते हैं, कविता भी अनुभूति से जन्मती है और कोमल भावों की अभिव्यक्ति है। (3) बच्चों के खेल की कोई समय-सीमा नहीं होती; कविता भी देश, काल और जड़-चेतन की सीमाओं से परे होती है।
- Q7(ii)** यह कविता ऊपर से क्रूरता का चित्र है, परंतु उसके मूल में **करुणा** है। कवि मीडिया की **क्रूरता** दिखाता है – कार्यक्रम संचालक अपाहिज से 'आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है' जैसे संवेदनहीन प्रश्न पूछकर उसकी पीड़ा को कुरेदता है और उसे रलाने की कोशिश करता है, ताकि दर्शकों की भावुकता से व्यावसायिक लाभ कमाया जा सके। अपाहिज की विवशता और अपनी पीड़ा

व्यक्त न कर पाने की स्थिति पाठक में करुणा जगाती है। अतः कवि क्रूरता का चित्रण करके करुणा उत्पन्न करता है। (किसी एक पक्ष का तर्कपूर्ण उत्तर स्वीकार्य)

Q7(iii) 'कवितावली' में तुलसीदास बताते हैं कि उस समय किसान के पास खेती नहीं, भिखारी को भीख नहीं, बनिए को व्यापार नहीं और नौकर को नौकरी (चाकरी) नहीं थी। जीविका के साधनों के अभाव में लोग चिंतित होकर पूछते थे – "कहाँ जाई, का करी?" भूख से बेहाल लोग ऊँचे-नीचे, नैतिक-अनैतिक कर्म करते थे और पेट की आग बुझाने के लिए अपनी संतान तक बेचने को विवश थे। शासक वर्ग प्रजा के प्रति उदासीन था।

Q8(i) भादो की वर्षा समाप्त होने पर शरद ऋतु आती है। आसमान से बादलों का साम्राज्य समाप्त हो जाता है, आकाश स्वच्छ और मुलायम हो जाता है, दिशाएँ उज्ज्वल हो जाती हैं और सवेरा खरगोश की आँखों जैसा लाल-चमकीला हो जाता है। वातावरण उमंग और उल्लास से भर जाता है और बच्चे पतंग उड़ाने लगते हैं।

Q8(ii) 'जीवन का पारावार' **बादल** को कहा गया है, क्योंकि बादल गरमी से तपती धरती पर वर्षा करके फसलों और पेड़-पौधों को नया जीवन देता है; उसमें जीवन का अपार सागर भरा है। वह भूख-प्यास से त्रस्त लोगों और सर्वहारा वर्ग में नवजीवन और क्रांति की आशा का संचार करता है।

Q8(iii) 'भाषा में पेंच कसना' का आशय है – बात को चमत्कारिक बनाने के लिए भाषा के साथ ज़रूरत से ज़्यादा प्रयोग करना; अनावश्यक अलंकार, बिंब और मुहावरे भरकर भाषा को जटिल बना देना। इससे सीधी-सरल बात का अर्थ ही खो जाता है, जैसे पेंच को ज़्यादा कसने से उसकी चूड़ी मर जाती है।

Q9

(i) (C) महामारी के कारण गाँव वालों की असहाय स्थिति से दुखी होने के कारण।
 (ii) (B) क-(ii), ख-(iii), ग-(i)।
 (iii) (A) महामारी की भयानकता और दुष्प्रभाव का उल्लेख करने हेतु।
 (iv) (C) उत्तेजना युक्त उत्साह।
 (v) (B) मृत्यु या अनिष्ट की आहट।
 (पाठ : 'पहलवान की ढोलक', फणीश्वरनाथ रेणु)

Q10(i) महादेवी और भक्तिन का संबंध स्वामी-सेवक का नहीं, आत्मीय संबंध था। (1) भक्तिन सेविका होते हुए भी स्वामिनी पर अधिकार-भाव रखती थी और उनकी बात न मानकर अपने ढंग से काम करती थी। (2) वह महादेवी के भ्रमण की एकांत साथिन थी और जेल तक साथ जाने को तैयार थी। (3) लेखिका उसे अपने व्यक्तित्व का ज़रूरी अंश और परिवार की आत्मीय सदस्या मानती थी; वह उनकी स्नेहपूर्ण हितैषी थी, इसलिए उसे हटाना असंभव था।

Q10(ii) सूखे के समय गाँव के लड़कों की 'इंदर सेना' इंद्र देवता को प्रसन्न करने के लिए घर-घर जाकर पानी माँगती थी और लोग अपने कठिनाई से बचाए हुए पानी को त्याग और दान समझकर उन पर डालते थे। लेखक का वैज्ञानिक मन इसे पानी की निर्मम बर्बादी और अंधविश्वास मानता था। परंतु जीजी का तर्क था कि त्याग और दान से ही फल मिलता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण होते हुए भी सामाजिक-सांस्कृतिक दबाव और जीजी के प्रति स्नेह के कारण लेखक को परंपरागत मान्यता स्वीकार करनी पड़ी – यही द्वंद्व है।

Q10(iii) श्रम विभाजन – मानवोपयोगी कार्यों का लोगों की रुचि, योग्यता और दक्षता के आधार पर वर्गीकरण (बँटवारा) श्रम विभाजन है। (1)
आवश्यकता – सभ्य समाज में कार्य-कुशलता के लिए, कार्यक्षमता और उत्पादकता बढ़ाने के लिए तथा आर्थिक समृद्धि के लिए श्रम विभाजन आवश्यक है। आंबेडकर के अनुसार यह विभाजन स्वाभाविक रुचि पर आधारित होना चाहिए, जन्म या जाति पर नहीं। (2)

Q11(i) भगत जी (चूरन वाले) संयमी और संतोषी व्यक्ति हैं। वे संग्रह, तृष्णा, लोभ और धन-संचय से दूर रहते हैं; छह आने से अधिक की कमाई नहीं करते। बाज़ार का आकर्षण उन्हें नहीं लुभाता; वे केवल ज़रूरत का सामान (जीरा, काला नमक) खरीदते हैं। ऐसे लोग बाज़ार को सार्थकता देते हैं।

Q11(ii) शिरीष की तुलना **कालजयी अवधूत (संन्यासी)** से की गई है। जैसे अवधूत सुख-दुख में समान रहता है, वैसे ही शिरीष भीषण गरमी और लू में भी हरा-भरा और फूलों से लदा रहता है; वह आठों याम अपनी धुन में मस्त, बेपरवाह, सरस और मादक बना रहता है।

Q11(iii) आंबेडकर के अनुसार दासता केवल कानूनी गुलामी नहीं है। जब कुछ लोगों को दूसरों द्वारा निर्धारित व्यवहार और कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है, अपनी शक्ति का सक्षम और प्रभावशाली प्रयोग करने की स्वतंत्रता नहीं होती और इच्छानुसार व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता नहीं मिलती, तो वह भी दासता है।

Q12(i) **बदलते जीवन-मूल्य** – कहानी में यशोधर बाबू पुरानी परंपराओं, सादगी और सामाजिक संबंधों के प्रतीक हैं, जबकि उनके बच्चे और पत्नी आधुनिक दिखावटी जीवन-शैली अपना चुके हैं। (1) आधुनिकता और पारंपरिक संस्कारों में टकराव है – सिल्वर वैडिंग की पार्टी, केक काटना, अंग्रेज़ी रीति-रिवाज़ यशोधर बाबू को 'समहाउ इंप्रॉपर' लगते हैं। (2) मानवीय मूल्य हाशिए पर हैं; बच्चे पिता की सलाह की परवाह नहीं करते, रिश्तों में अलगाव है। (3) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभुत्व और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अधिक महत्त्व दिया जा रहा है।

बदलने के कारण – व्यक्तिवादी सोच, वैचारिक मतभेद और पीढ़ी-अंतराल; औद्योगीकरण और शहरीकरण; पाश्चात्य संस्कृति के प्रति बढ़ता आकर्षण और उपभोक्तावाद। इसलिए यशोधर बाबू जैसे लोग अपने ही घर में अकेले पड़ जाते हैं।

Q12(ii) यह कथन आनंद (लेखक) का है, जो पढ़ना चाहता है जबकि उसका पिता उसे खेती में लगाए रखना चाहता है। इसमें ग्रामीण युवाओं की मानसिक स्थिति झलकती है – (1) उनकी कृषि-कार्य में रुचि कम या समाप्त हो रही है, क्योंकि खेती कठिन श्रम-साध्य है और उससे अपेक्षित आय नहीं होती। (2) उन्हें लगता है कि खेती से आर्थिक संपन्नता के सपने पूरे नहीं हो सकते। (3) वे अपना जीवन-स्तर बेहतर करना चाहते हैं; शिक्षित होकर नौकरी के माध्यम से अच्छा जीवन जीने की लालसा रखते हैं। (4) शहरी जीवन का आकर्षण और कठोर शारीरिक परिश्रम के स्थान पर मानसिक श्रम से आगे बढ़ने की इच्छा उन्हें गाँव और खेती से पलायन की ओर ले जाती है। आनंद का संघर्ष दिखाता है कि शिक्षा ही उन्हें इस 'गड्ढे' से निकालने का रास्ता है।

Q12(iii) (1) मुअनजो-दड़ो नगर-नियोजन की अनूठी मिसाल है, जबकि आज के शहरों में नियोजन के नाम पर अराजकता है। (2) वहाँ की योजना ग्रिड प्लान पर आधारित थी – सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं; आज के बड़े शहरों की बसावट ऐसी है कि उनके स्वयं विकसित होने का अवकाश नहीं। (3) इमारतें खंडहर बन चुकी हैं, फिर भी सड़कों और गलियों का विस्तार स्पष्ट है; आज की 'सेक्टर-मार्क' कॉलोनिनों में आड़ा-सीधा नियोजन तो है, पर रहन-सहन नीरस है। (4) वहाँ जल की उपलब्धता और ढकी हुई नालियों द्वारा निकासी की समुचित व्यवस्था थी, जबकि आज जल-प्रबंधन और जल-निकासी का अभाव दिखता है। (5) मकानों के दरवाज़े मुख्य सड़क की ओर न खुलकर पीछे की गलियों में खुलते थे, जिससे दुर्घटनाएँ कम होती थीं; आज अधिकांश दरवाज़े मुख्य सड़क पर खुलते हैं। इस प्रकार लेखक प्राचीन नगर-योजना को आज से अधिक व्यवस्थित मानता है।



All the best for your boards!

Complete chapter-wise notes, NCERT solutions and more at **notesbazar.in**